5287

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
टेस्ट-6

DTVF OPT-24 H-2406

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Ravi Raaz
Mobile Number:
Medium (English/Hindi): Hindi
Reg. Number:
Center & Date: 525/ Mukherjee Nagar
UPSC Roll No. (If allotted): 8007323

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
*इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा **हिन्दी एवं अंग्रेज़ी** भाषा में मुद्रित हैं।*
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
*प्रश्न संख्या **1** और **5 अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1						25	5	5	5	5	4.5	4	23.5
2	12	6.5	7.5			26	6						
3	-	-	-	-	-	-	7	11	7.5	6.5			25
4	12	7.5	7.5			27	8						
						सकल योग (Grand Total)							126.5

FC-175 Ray

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

→ संदर्भ दक्षता अच्छी है।

→ विषयवस्तु की समझ बेहतर है।

→ फ्लो-चार्ट एवं उपशीर्षक का प्रयोग प्रभावी है।

→ भाषा प्रवाह अच्छा है।

→ परिचय दक्षता बेहतर है।

→ तथ्यात्मक समायोजन अच्छा है।

→ उत्तर का विस्तार करें। → प्रश्न संख्या 7 व 18

→ निष्कर्ष दक्षता अच्छी है।

→ सराहनीय प्रयास

→ निरंतर उत्तर लेखन अभ्यास करते रहें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ सं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: **2½ × 20 = 50**

Identify the following places marked on the map (Page no. 5) supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your question-cum-answer booklet. Locational hints for the each of the places marked on the map are given below seriatim. **2½ × 20 = 50**

(i) एक महाजनपदकालीन स्थल

A Mahajanapada Site

(1) संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा संचालन नियमावली के तहत दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए मानचित्र आधारित प्रथम प्रश्न का उत्तर देना अपेक्षित नहीं है।

25/50

(ii) एक मौर्योत्तरकालीन कला केंद्र

A Post-Mauryan Art Center

(2) इस प्रश्न के लिए अंकों का आवंटन शेष प्रश्नों के उत्तर से प्राप्त अंकों के अनुपात में आवंटन किया जाना नियमानुसार है

अतः चूंकि मैं दृष्टिबाधित अभ्यर्थी हूँ इसलिए मुझे इसी अनुरूप अंकों को आवंटित किया जाए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iii) एक संगमकालीन पत्तन
A Sangam Era Port

(iv) एक मौर्यकालीन बौद्धस्थल
A Mauryan Buddhist Site

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) एक प्राचीन वैष्णव केंद्र
An Ancient Vaishnava Center

(vi) एक प्राचीन शिक्षा केंद्र
An Ancient Education Center

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(vii) एक ब्राह्मण धार्मिक केंद्र
A Brahmin Religious Center

(viii) एक मौर्यकालीन स्थल
A Mauryan Site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ix) एक प्रसिद्ध शिलालेख स्थल

A Famous Inscription Site

(x) एक बौद्ध गुफा स्थल

A Buddhist Cave Site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक प्राचीन पत्तन
An Ancient Port

(xii) एक महाजनपद स्थल
A Mahajanapada Site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xiii) एक मौर्योत्तरकालीन व्यापारिक पत्तन
A Post-Mauryan Trading Port

(xiv) एक बौद्ध केंद्र
A Buddhist Center

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xv) एक प्रसिद्ध स्तूप स्थल
A Famous Stupa Site

(xvi) एक चालुक्यकालीन राजधानी स्थल
A Chalukyan Capital Site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xvii) एक पाण्ड्य राजधानी केंद्र
A Pandya Capital Center

(xviii) एक मौर्योत्तरकालीन राजधानी स्थल
A Post-Mauryan Capital Site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक प्राचीन बन्दरगाह

An Ancient Port

(xx) एक मौर्यकालीन पुरातात्विक स्थल

A Mauryan Archaeological Site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) बौद्ध एवं जैन धर्मों का उदय समान परिस्थितियों में हुआ, लेकिन सिद्धांत एवं व्यवहार के स्तर पर समानता एवं असमानता दोनों बिन्दुओं को परिलक्षित करते हैं। 20
Buddhism and Jainism emerged under similar circumstances, but reflected both equality and inequality at the level of principles and practice. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बौद्ध और जैन धर्म 6 सदी ई.पू. में उत्पन्न भारतीय समाज व संस्कृति के दो महत्वपूर्ण आयाम माने जाते हैं, जिनकी उत्पत्ति समान परिस्थितियों का परिणाम थी फिर भी दोनों के बीच सिद्धांत तथा व्यवहार के स्तर पर पर्याप्त समानता व असमानता के तत्व देखे जा सकते हैं।

परिचय अच्छा है।

बुद्ध व जैन धर्म के उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार परिस्थितियाँ

विषयवस्तु की समझ अच्छी है।

परिस्थितियाँ

- (i) ब्राह्मणों के सर्वोच्चता के विरुद्ध क्षत्रियों की प्रतिक्रिया (बुद्ध व महावीर दोनों ही क्षत्रिय)।
- (ii) ब्राह्मणवादी कर्मकांड के विरुद्ध जन असंतोष।

पुरोहितों द्वारा विशेषाधिकारों का प्रयोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iii) → वैदिक यज्ञ व अनुष्ठानों में पशुबलि के कारण कृषि अर्थव्यवस्था के दुष्प्रभावित होने से वैदिक धर्म के विरुद्ध असंतोष।

(iv) व्यापार और वाणिज्य की प्रगति से वैश्य की सामाजिक आकांक्षा में वृद्धि जबकि वैदिक व्यवस्था में वैश्यों को निम्न सामाजिक स्थिति (निम्न अधिकांश तथा बौद्ध तथा जैन मतावलंबी वैश्य वर्ण से)।

(v) अहिंसा तथा महाजनी की स्वीकृति के कारण व्यापार वाणिज्य का प्रोत्साहन फलतः बौद्ध तथा जैन धर्म को जन समर्थन।

बौद्ध तथा जैन धर्म के सिद्धांतों व व्यवहारों में समानता के तत्व -

तत्व

→ (i) वैदिक कर्मकांडों की अस्वीकृति।

- प्रस्तुतीकरण के स्तर पर प्रयास अच्छा है।

→ वैदिक वर्णवादी व्यवस्था, जिसमें वर्ण का निर्धारण कर्म के बजाय जन्म से होने लगा था।

विश्लेषण दक्षता अच्छी है

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ (ii) ईश्वर की सत्ता की अस्वीकृति।

→ (iii) पुनर्जन्म में विश्वास।

→ (iv) 'मोक्ष' को अंतिम शुभ मानना।

→ (v) संस्कृत के स्थान पर लोकभाषा का उपयोग (बुद्धकालीन जैन प्राकृत)।

→ (vi) दोनों के द्वारा स्थापत्य व राज्यत्व के विकास में योगदान।

दोनों संसार को दुखमय मानते हैं, जिसका मूल कारण तृष्णाएँ हैं।

→ दोनों कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थक

~~दोनों का पुनर्जन्म में~~ निर्वाण के लिए सदाचार एवं नैतिकता पर बल

बुद्ध तथा ~~धर्म~~ जैन धर्म के सिद्धांतों का व्यवहार में अंतर —

बौद्ध धर्म	जैन धर्म
→ आत्मा की सत्ता की अस्वीकृति	→ आत्मा में विश्वास
→ मध्यमार्ग का प्रतिप्रेषण	→ अतिवाद पर बल
→ ~~संवर व निर्जरा~~ बौद्ध साहित्य तथा बुद्ध के उपदेशों की भाषा के रूप में पाली का उपयोग	संवर व निर्जरा → उपदेश व साहित्य के भाषा के रूप में प्राकृत पर बल

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ समाज के सभी वर्गों द्वारा अपनाया जाना (राजा अशोक से लेकर डो. बी. अम्बेडकर)	→ मुख्यत: वैश्यों के द्वारा अपनाया जाना
→ ब्राह्मणवादी कर्मकांड व वर्ण व्यवस्था पर कठोर प्रहार	→ वैदिक कर्मकांड व वर्ण व्यवस्था के प्रति नरम रुख
→ क्षणिकवाद, शून्यवाद जैसे सिद्धांतों का प्रतिपादन	→ स्यादवाद, अनेकांतवाद जैसे सिद्धांतों का प्रतिपादन

अंतर के उपरोक्त तत्वों के बावजूद बौद्ध तथा जैन धर्म अपनी उत्पत्ति व लक्ष्यों के स्तर पर लगभग एक समान थे जिन्होंने प्राचीन कालीन भारतीय समाज व धर्म की जड़ता पर चोट किया और आधुनिक विश्व में युद्ध के स्थान पर भारत को बुद्ध का देश बना दिया।

→ भाषा प्रवाह अच्छा है

- तथ्यात्मक जानकारी बेहतर है

सराहनीय प्रयास

12/20

त्रिस्तरीय प्रभावी है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) संगमकालीन पुरातत्व संबंधी साक्ष्य साहित्यगत विवरण में उल्लिखित अनेक नगरों तथा स्थलों की ऐतिहासिकता को एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। स्पष्ट कीजिये। 15

The archaeological evidence of the Sangam period provides a solid basis for the historicity of many cities and sites mentioned in the literary account. Clarify. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संगम काल दक्षिण भारत विकास के महत्वपूर्ण चरण को अभिव्यक्त करता है इस काल से संबंधित विस्तृत जानकारियाँ संगम साहित्यों से प्राप्त होती हैं।

संगमकालीन व्यापार और स्थल की पुष्टि साहित्यिक स्रोत के साथ-साथ पुरातात्विक अवशेषों से भी होती है।

कुछ तथ्य

→ (i) संगम साहित्य में विस्तृत व्यापार और वाणिज्य का चित्रण किया गया है।

→ (ii) अरिकमेडु से प्राप्त रोमन सिक्के भारत तथा रोमन साम्राज्य के बीच के व्यापारिक संबंधों को परिपुष्ट करता है।

शुरुआत अच्छी है

विषयवस्तु की समझ अच्छी है

प्रकार, जो कि संगमकालीन राजधानियों में से एक था, इसकी पहचान कावेरीपट्टनम से की गई है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) संगम साहित्य मसालों, सूती वस्त्र, कीमती पत्थर व आभूषणों आदि के व्यापार की विस्तृत चर्चा की गई है जिसकी पुष्टि संगम कालिक पुरातात्विक अवशेषों के उत्खनन के दौरान पाए गए अवशेषों से होती है।

(iii) संगम साहित्यों में चोल, चेर तथा पांड्य राजधानी व महत्वपूर्ण नगरीय केंद्र के रूप में 'मदुरा' व, तंजौर आदि की चर्चा की गई है जिसकी पुष्टि न केवल बाद के साहित्यिक साक्ष्य अपितु संगमकालीन पुरातात्विक अवशेष तथा तमिल ~~ब्राह्मी~~ ब्राह्मी लिपि में रचित से भी होती है।

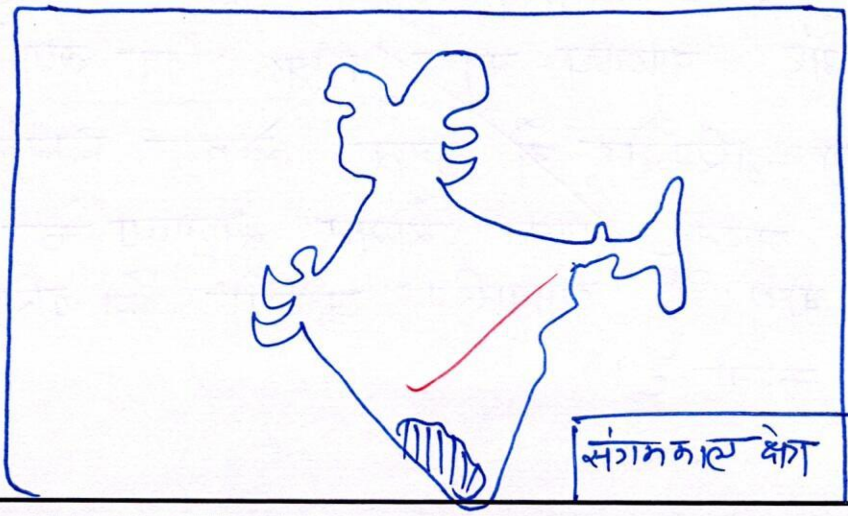

- प्रस्तुतीकरण के स्तर पर प्रयास अच्छा है

- आगस्टस तथा टिबेरियस के मुहर वाले सिक्के और नीरो के सोने और चाँदी के सिक्के तमिल प्रदेश के अनेक स्थलों से प्राप्त हुए हैं

करूर जो चेरों की प्राचीन राजधानी थी, के उत्खननों से सुराहियों के टुकड़े, स्थानीय पत्रांकित बर्तन, एरोमन ताम्र सिक्का भी प्राप्त हुआ है

1-900

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतैव संगम साहित्य के व्यापार तथा शहरीकरण की पुष्टि पुरातात्विक अवशेषों से होती है।

निष्कर्ष ठीक है

6.5/15

उत्तर का विस्तार करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) ऋग्वैदिक काल से सूत्रकाल तक सामाजिक-आर्थिक जीवन में हुए परिवर्तन एक क्रमिक विकास का परिणाम थे। चर्चा कीजिये। 15

Changes in the socio-economic life from the Rig-Vedic period to the Sutra period were the result of a progressive development. Discuss. 15

ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 ई.पू.) से लेकर सूत्रकाल (200 ई.पू - 300 ई.) के दौरान भारत में हुआ सामाजिक - आर्थिक विकास वर्तमान भारत भारतीय समाज का मुख्य आधार है। किंतु ऋग्वैदिक काल से सूत्रकाल के बीच हुआ सामाजिक - आर्थिक विकास ~~क्रमिक~~ पूर्णतः पृथक न होकर क्रमिक विकास का परिणाम था जिसके मूल में वर्ण आश्रम व्यवस्था ~~को~~ देखा जा सकता है

परिचय प्रभावी है

⊛ ऋग्वैदिक काल से सूत्रकाल के बीच हुआ सामाजिक विकास

→ (क) वर्ण व्यवस्था

→ (i) ऋग्वैदिक काल में केवल तीन वर्णों का प्रचलन तथा वर्ण व्यवस्था मुख्यतः कर्म पर आधारित

→ (ii) उत्तर वैदिक काल में चार वर्णों की व्यवस्था की शुरुआत, वर्ण जटिलता में वृद्धि

विषयवस्तु की समझ अच्छी है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा वर्ण व्यवस्था का जन्म आधारित होने लगना

(iii) महाजन काल के दौरान रक्त संबंध पर विशेष बल, वर्ण व्यवस्था का और कठोर होना किंतु पेशे व विवाह, के लिए वर्ण व्यवस्था का उल्लंघन फलतः वर्ण व्यवस्था भारत का आदर्श जबकि जाति व्यवस्था भारत का यथार्थ बन गई।

(iv) मौर्य व गुप्त काल आते-आते ब्राह्मणवाद के स्वरूप में परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन तथा शूद्रों को कृषि का अधिकार दिया जाना

(ख) महिलाओं की स्थिति

(i) ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को पर्याप्त शैक्षिक, राजनीतिक व आर्थिक अधिकार

(ii) उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में ह्रास की शुरुआत

(iii) महाजन काल में वर्ण जटिलता के कारण महिला की स्थिति अत्यंत दयनीय

- प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

→ ऋग्वैदिक काल से लेकर सूत्रकाल तक जैसे-2 मानव का जीवन पशुपालन से कृषि की तरफ परिवर्तित हुआ वैसे-2 स्थाई निवास की आवश्यकता महसूस हुई।

→ सूत्रकाल तक आते-2 बड़े-बड़े गांवों का विकास (द्वितीय नगरीकरण)

→ सभाओं में शामिल होने का अधिकार → घोषा, अपाला आदि ज्ञानवान महिलाएँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(IV) सूत्रकाल तक महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन यथा - कौटिल्य ने विधवाओं व वेश्यो के नरम दृष्टिकोण रखा

(ख) आर्थिक विकास

(क) ऋग्वेद मे पशुपालन जबकि उत्तर वैदिककाल मे कृषि आजीविका स्रोत। लोहे के फाल तथा धान की रोपाई से सूत्रकाल तक भारत एक कृषि प्रधान देश बन गया

(ख) ऋग्वैदिक काल मे व्यापार अत्यंत सीमित यथा केवल "पणि" का उदाहरण जबकि उत्तर वैदिक काल मे व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहन नही

महाजनकाल से सूत्रकाल के बीच मुद्रा अर्थ-व्यवस्था तथा व्यापारिक मार्गों व शिल्प विकास के कारण व्यापार वाणिज्य को प्रोत्साहन

इसके अतिरिक्त परिवार, गोत्र, शहरीकरण, मुद्रा अर्थव्यवस्था आदि मे भी क्रमिक विकास के तत्व देखे जा सकते हैं।

- निजी संपत्ति की अवधारणा

→ लोहे की खोज से सेना व प्रशासनिक तंत्र का विस्तार

त्रिवर्ष अच्छा है

7.5/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि "प्राचीन काल में भारतीय केवल तत्त्वमीमांसा में लिप्त थे, शुद्ध विज्ञान के विकास में नहीं"? 20

Do you agree that "the Indians of the ancient period indulged only in metaphysical things and not in the development of pure Science"? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य कुषाणों और सातवाहनों के समय के राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण को कैसे दर्शाते हैं? 15

How does numismatic evidence of the Kushanas and the Satavahanas reflect the political and economic outlook of that period? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) वाकाटक वंश के सुदृढ़ीकरण में विंध्यशक्ति और प्रवरसेन के शासनकाल के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

Highlight the significance of the reigns of the Vindhyashakti and Pravarasena in the consolidation of the Vakataka dynasty. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

4. (a) 200 ई.पू. से 300 ई. तक का काल व्यापार तंत्र के विस्तार तथा शहरों की संख्या में बढ़ोतरी की दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्नता का काल था, ऐसे में इसे अंधकार युग मानना कितना समीचीन है? तार्किक चर्चा कीजिये। 20

The period between 200 BC to 300 AD was much prosperous in view of expansion of the trade system and increasing number of cities, in this way, to what extent it is justifiable to assume it is a dark era? Discuss logically. 20

परम्परागत इतिहास लेखन में २०० ई. पू - ३०० ई. के काल को अंधकार का युग के रूप में चित्रित किया जाता रहा है।

शुरुआत अच्छी है

कारण

- (i) केन्द्रीकृत साम्राज्य के रूप में मौर्य साम्राज्य का पतन।
- (ii) क्षेत्रीय स्तर पर छोटे-छोटे राज्यों का उद्भव (शकों के 5 राज्य, हिंद यूनानी, पह्लव) आदि।
- (iii) प्राचीन वैदिक परंपरा के स्थान पर नवीन परंपराओं का विकास सामंतवाद के आरंभिक तत्वों की झलक (सातवाहनों के अधीन)।

विषयवस्तु की समझ बेहतर है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हालांकि नवीन इतिहास लेखन में 200 ई.पू.–300 ई. को अंधकार युग मानने के विचारों को कड़ी चुनौती दी गई है और इसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से प्रगति का काल बताया गया है।

इस काल में होने वाले व्यापार तंत्र के विकास तथा शहरों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि इसके द्योतक हैं।

-प्रस्तुतीकरण प्रभावी है।

पेरिप्लस ऑफ द इरीथ्रियन सी, तथा प्लिनी के वर्णन से ज्ञात होता है कि रोम के साथ व्यापार उन्नत अवस्था में था।

व्यापार तंत्र का विकास

- (क) **प्रेरक कारण**
  - (i) शहरी आबादी को अनाज की आवश्यकता
  - (ii) शिल्पियों को कच्चे माल की जरूरत
  - (iii) समृद्ध वर्ग को विलासितापूर्ण सामग्री (सामग्री) की जरूरत
  - (iv) रोम, मध्य तथा पश्चिम एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार
  - (v) व्यापार
  - (vi) मानसून की खोज

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यापारिक मार्गों तथा मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास

(ख) प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ

(क) आयात की वस्तुएँ :-
- शराब, कीमती धातु, मसाले, कीमती पत्थर, अरेटाइन मृदभांड

(ख) निर्यात की वस्तुएँ :-
- मसाले, सूती व रेशमी वस्त्र, अनाज, पाकशाला, लौह उपकरण, औषधि

(ग) व्यापारिक साझेदार - रोम, दक्षिण-पूर्वी एशिया, चीन, मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, और उत्तरी अफ्रीका

(घ) मिलिन्दपन्हो में 75 व्यवसायों का जिक्र

शहरीकरण -
- (क) वाणिज्य और व्यापार के विकास तथा कृषि अर्थव्यवस्था में विस्तार के कारण शहरीकरण का प्रोत्साहन।

तथ्यात्मक समायोजन एवं विश्लेषण दक्षता अच्छी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मूर्तिकला, चित्रकला आदि के विकास से शहरीकरण की अभिव्यक्ति।

(ग) उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत के बीच तक्षशिला, पुरुषपुर, वैशानगर, मथुरा बनारस, पाटलीपुत्र, पेठन आदि के रूप में अनगिनत नगरों का अस्तित्व में होना।

(घ) R.S Sharma के अनुसार इस काल में शहरीकरण के तीन से पाँच स्तरों की प्राप्ति

(ङ) तत्कालिक शहर राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यापारिक, आर्थिक व धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित।

व्यापार तंत्र तथा नगरीकरण के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार के कारण ही 200 ई.पू.-300 ई. के काल को अंधकार युग के रूप में चित्रित करना तथ्यों का सरलीकरण होगा फिर इस काल में विज्ञान व प्रौद्योगिकी तथा धर्म के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विकास देखने को मिलता है।

मुख्य व्यापारिक मार्गों पर बौद्ध मठों का विकास
↓
इन मठों में दैनिक अनुष्ठान के लिए तेल, धूपबत्ती, वस्त्र आदि की आवश्यकता
↓
व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

मुख्य बिंदु रेखांकित करें।

12/20

निष्कर्ष प्रभावी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) "मौर्योत्तर कलात्मक गतिविधियों का संबंध धर्म से था और कलाकृतियों में धर्म परिलक्षित होता है।" उक्त कथन के आलोक में मौर्योत्तर कलात्मक विकास को दर्शाइए। 15

"Post-Mauryan artistic activities belonged to religion and religion reflects in artifacts. "In the view of said statement define the artistic development of Post-Maurya era. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कला के विकास की दृष्टि से मौर्योत्तरकाल ~~एक~~ भारतीय इतिहास में विशेष स्थान रखता हैं। मौर्योत्तर कालीन कला की अभिव्यक्ति इसके विभिन्न रूपों में होती हैं जिस पर धर्म का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता हैं।

भूमिका अच्छी है

मौर्योत्तर कालीन कला के रूप

- स्तूप
- चैत्य व विहार
- चित्रकला
- मूर्तिकला

कंटेंट दक्षता प्रभावी है

स्तूप

→ मूलतः जनजातीय अभिवृत्ति से प्रेरित

→ एक अर्द्धवृत्ताकार टीले का निर्माण किया जाता जिसके बीच में हर्मिका बनाई जाती

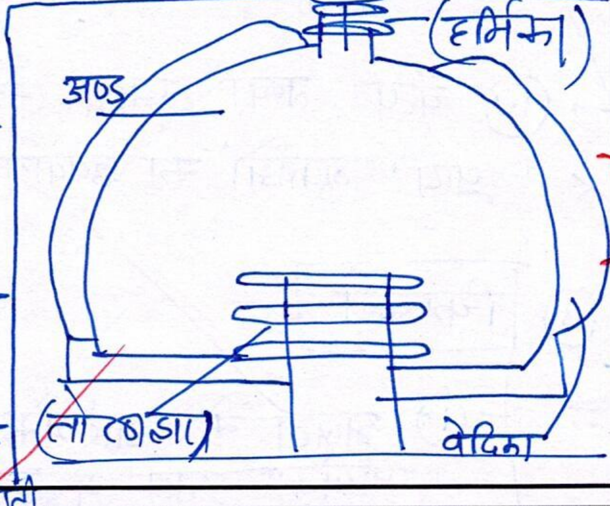

good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ बुद्ध अथवा अन्य बौद्ध संतो के अवशेष या उनके द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं को रखा जाता है।

(iii) स्तूप के चारों ओर प्रदक्षिणापथ का निर्माण होता जिसके चारो ओर वेदिका बनी होती

(iv) तोरणद्वार को स्थानीय तत्वों से सजाया जाता सांची का स्तूप, अमरावती का स्तूप प्रमुख

- प्रस्तुतीकरण के स्तर पर प्रयास अच्छा है।

2 चैत्य तथा विहार

(i) चैत्य बौद्धों का पूजागृह होता।

(ii) कार्ले का चैत्य तथा भज का चैत्य प्रमुख तत्कालिक चैत्य।

(iii) विहार बौद्ध भिक्षुओं का आवास स्थल होता जहाँ बौद्ध सिद्धांतों के अनुरूप जीवन यापन की व्यवस्था होती।

(iv) चैत्य तथा विहार को बनाने के लिए प्राय: गुफाओं का उपयोग किया जाता।

- शुंगकालीन भरहुत के स्तूप पर यक्ष-यक्षिणियों, जातक कथाओं और बौद्ध चिह्नों का सुंदर चित्रण है।

तथ्यात्मक जानकारी अच्छी है।

3 चित्रकला

(i) अजंता के आरंभिक भित्ति चित्र सातवाहन काल मे ही निर्मित।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) बौद्ध धर्म की इसमें स्पष्ट अभिव्यक्ति।

(iii) कुषाणकाल में भी चित्रकला पर विशेष बल किंतु चित्रों में नग्नता व आभूषणों पर विशेष बल।

(iv) चित्रों में जीवन्तता।

4 मूर्तिकला

(i) पश्चिमोत्तर में मूर्तिकला की गांधार शैली, उत्तर भारत में मथुरा शैली तथा दक्षिण भारत में अमरावती शैली का विकास।

(ii) जहां गांधार शैली मुख्यतः बौद्ध धर्म से प्रेरित (किंतु रोमन यूनानी प्रभाव भी)। वही मथुरा शैली पर जैन धर्म के साथ ही बौद्ध व ब्राह्मण धर्म का भी प्रभाव।

(iii) अमरावती शैली में भौतिकता पर विशेष बल जो कि व्यापार और वाणिज्य में विकास का परिणाम।

कला के अपने विभिन्न स्वरूप के कारण ही मौर्योत्तर काल इतिहासकारों व कला प्रेमियों के बीच अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं।

गांधार शैली में पहली बार बौद्ध (बुद्ध) की सुंदर मूर्तियां बनाई गई जो यूनानी देवता अपोलो की मूर्तियों से मिलती जुलती है

मथुरा कला शैली से संबंधित मूर्तियों में यक्ष, कुबेर व बलराम की मूर्तियाँ प्रमुख है

निष्कर्ष अच्छा है

7.5/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टॉवर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(c) प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली का आकलन करते हुए उस अवधि के महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों की पहचान कीजिये। 15

Assessing the educational system in early medieval India, identify important educational institutions of the period. 15

प्रारंभिक मध्यकाल (8वीं - 12वीं सदी)

भारत में बहुआयामी विकास के लिए जाना जाता है शिक्षण प्रणाली मे विकास इनमें से प्रमुख आयामों में से एक है।

भूमिका अच्छी है

प्रारंभिक मध्यकालीन शिक्षण प्रणाली की

विशेषताएं

- (i) बनारस, नालंदा, विक्रमशिला कांची, तंजावुर शिक्षा के लिए बेहद ही प्रसिद्ध।
- (ii) कानून, धर्म, दर्शन, साहित्य, चिकित्साशास्त्र, खगोलशास्त्र तथा संगीत अध्ययन के महत्वपूर्ण विषय।
- (iii) शिक्षण प्रणाली पर उच्च वर्ग का प्रभुत्व जहाँ अधिकांश शिक्षक ब्राह्मण वर्ग व बौद्ध तथा जैन भिक्षुओं वहीं शूद्रों और कुछ हद तक वैश्यों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखना।

विषयवस्तु के स्तर पर अच्छी समझ है

शिक्षा प्रणाली सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर केन्द्रित थी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) शिक्षण प्रणाली मे इस समय तक इहलौकिकता के स्थान पर परलौकिकता तथा आध्यात्मिकता पर विशेष बल दिया जाने लगा थे।

(v) महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से अप: वंचित रखना।

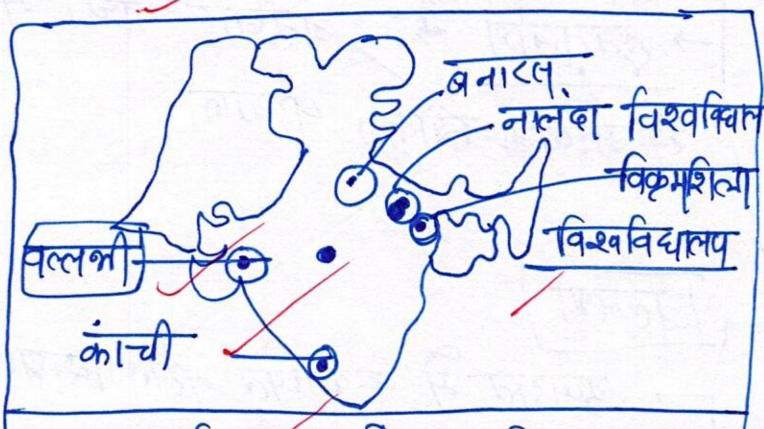

तत्कालिक भारत के प्रमुख शिक्षण संस्थान

1 नालंदा विश्वविद्यालय
- (i) कुमारगुप्त द्वारा स्थापित तथा पाल शासकों द्वारा पल्लवित पुष्पित।
- (ii) भारत के अतिरिक्त तिब्बत, चीन, मंगोलिया, जापान, कोरिया आदि से छात्रों का आगमन
- (iii) शैलेन्द्र शासक बलपुत्रदेव के द्वारा भी सहयोग दिया जाना

प्रस्तुतीकरण प्रभावी है

अध्यापन और शिक्षा में नैतिक बौद्ध धर्म, वज्रयान बौद्ध धर्म, जैन धर्म, दर्शन, तत्व मीमांसा व्याकरण आदि के सिद्धान्तों का पालन करके उस स्वंय परिवार एवं समाज के मूल्यों को पूरा किया

आर.एस. शर्मा के अनुसार ↓ सामाजिक पदानुक्रम, कर्मकांड और मन्त्रों पर एक वर्ग का प्रभुत्व

good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2 विक्रमशिला विश्वविद्यालय →
- → धर्मपाल द्वारा स्थापित
- → बौद्ध शिक्षा का महान केंद्र

3 → कांची
- → दक्षिण भारत का महान शैक्षिक केंद्र
- → 'ह्वेनसांग' के अनुसार कांची में 100 से अधिक शिक्षण संस्थान

4 → वल्लभी
- → गुजरात में स्थापित महान शिक्षा का केंद्र
- → बौद्ध तथा जैन शिक्षा के साथ ही विज्ञान का भी अध्ययन

इसके अतिरिक्त ओदंतपुरी, सोमपुरी, बनारस आदि भी शिक्षा के महान केंद्र थे जिन्होंने प्रारंभिक मध्यकाल के दौरान भारत में शिक्षा के विकास तथा प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

→ ओदंतपुरी विश्वविद्यालय
→ सोमपुर विश्वविद्यालय
→ जगद्दला विश्वविद्यालय
↓ इसका उल्लेख भी संक्षेप में करें।
↓ एक-एक विशेषता कम से कम अवश्य बताएं।

यहाँ पदानुक्रम स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया था। 1200 ई० में बख्तियार खिलजी द्वारा नष्ट

निष्कर्ष अच्छा है

7.5/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50
Answer the following in about 150 words each: 10 × 5 = 50

(a) भारतीय समाज के संदर्भ में फाह्यान के विवरण की आलोचनात्मक चर्चा कीजिये।
Critically discuss Fa Hien's account of the society of India.

फाह्यान (399-414 ई.) गुप्त काल में आया एक महत्वपूर्ण चीनी यात्री था, जिसने अपने यात्रा वृत्तांत में भारतीय समाज के संदर्भ में विशद विवरण पेश किया है।

भूमिका अच्छी है

भारतीय समाज के संबंध में फाह्यान के विचार -

(i) भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित

(ii) अछूतों की दयनीय दशा पर उसका विशेष बल (अछूतों को देखने को भी अशुभ माना जाना)

(iii) भारतीय समाज की समृद्धि की विशेष चर्चा

(iv) इस क्रम में पाटलीपुत्र तथा मध्य देश की समृद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला जाना

विषयवस्तु की समझ अच्छी है

गंभीर अपराध और अशांति का उल्लेख

सम्मानित लोग शाकाहारी थे, मांसाहार निम्न जातियों तक सीमित

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) शासक वर्ग की प्रतिष्ठा को रेखांकित किया

(vi) महिलाओं की दयनीय दशा की ओर इशारा

फाह्यान के विवरण की सीमाएँ :-

सीमाएँ
(i) वास्तविक अनुभव के स्थान पर किवंदतियों से प्रेरित
(ii) भारतीय समाज की वास्तविक समझ नहीं
(iii) बौद्ध विचारों से अत्यधिक प्रतिफलित। वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का अभाव
(iv) कई स्थानों पर भ्रामक जानकारियाँ

अपने उपरोक्त सीमाओं के बावजूद फाह्यान का विवरण गुप्तकालीन समाज को समझने में वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

→ बिन्दुवार लेखन का प्रयास अच्छा है

उनका विवरण एक आदर्श समाज को दर्शाता है जहाँ हर कोई सुखी और संतुष्ट

→ आर्थिक स्थितियां
→ लोगों के दान से बने अस्पतालों का उल्लेख
→ भारत के आंतरिक एवं बाह्य व्यापार बंदरगाहों का उल्लेख

→ निष्कर्ष अच्छा है

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) भारत में अबू अल-रयान मुहम्मद इब्न अहमद अल-बरुनी के कार्यों पर प्रकाश डालिये।
Highlight the work of Abu al-Rayḥan Muḥammad ibn Aḥmad Al-beruni in India.

अल बरूनी महमूद गजनवी के आक्रमण के साथ भारत आया था जिसने अपनी किताब 'किताब-उल-हिंद' में 11वीं सदी के पूर्वार्द्ध के भारतीय समाज व संस्कृति पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

भूमिका उचित है

अलबरूनी के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

(i) भारतीय अहंकारी व आत्माभिमानी थे जो अपने देश, राजा व विज्ञान से बढ़कर किसी के अन्य के देश, राजा व विज्ञान को नहीं मानते (यद्यपि इनके पूर्वज ऐसे नहीं थे)।

(ii) भारतीय चार वर्णों व आठ अंत्यज जातियों में विभाजित था।

(iii) शूद्र व वैश्य नगरों व सरायों में एकसाथ रहते तथा दोनों को ही वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं था।

अलबरूनी ने पंतजलि, गीता, पुराण, सांख्य दर्शन आदि के उदाहरण बड़े पैमाने पर दिए हैं।

अवधारणात्मक समझ बेहतर है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) महिलाओं के बीच सती प्रथा प्रचलित थी।

(v) कन्नौज, बनारस तथा थानेश्वर हिंदुओं के प्रमुख धार्मिक केंद्र

अलबरूनी के कार्य की सीमाएं-

सीमाएं

(i) तत्कालिक राजनीतिक आर्थिक घटनाओं पर कोई प्रकाश नहीं।

(ii) वास्तविक अनुभव के स्थान पर सुनी सुनाई बातों पर विशेष बल।

(iii) कुछ भ्रामक जानकारियां भी दिया जाना यथा - हिंदु बाल और नाखुन नहीं काटते

इन सीमाओं के बावजूद अलबरूनी का कार्य 11वीं सदी के भारतीय समाज व संस्कृति से संबंधित जानकारियों का स्रोत माना जाता है।

- बाल विवाह का उल्लेख एवं विधवाओं की दयनीय स्थिति पर प्रकाश

- अलबरूनी ने भारतीय विज्ञान के पतन के लिए ब्राह्मणों के अहंकार और कट्टर विद्वेष को जिम्मेदार ठहराया।

प्रस्तुतीकरण अच्छा है

मुख्य बिंदु रेखांकित अवश्य करें

निष्कर्ष अच्छा है

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अभिलेखीय स्रोतों के आलोक में चोलों और 20वीं शताब्दी की देवदासी व्यवस्था के दौरान मंदिर की महिलाओं की स्थितियों की चर्चा कीजिये।

Discuss the conditions of the temple women during the reign of the Cholas and Devadasi system of 20th century in the light of inscriptional sources.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मंदिर महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल से ही समाज में अत्यंत दयनीय रही जिसकी अभिव्यक्ति मंदिरों में प्रचलित देवदासी प्रथा में भी होती है।

सटीक शुरुआत

महिलाओं की स्थिति से संबंधित

कुछ तथ्य

- (i) महिलाओं की स्थिति में क्रमिक ह्रास।
- (ii) महिलाओं को शिक्षा तथा उत्तराधिकार के अधिकार से वंचित रखा जाना।
- (iii) महिलाओं के बीच सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि का प्रचलन।
- (iv) चोल काल में भी महिलाओं की दशा बेहद ही दयनीय।

अवधारणात्मक समझ अच्छी है

मंदिर के लिए उनके द्वारा की जाने वाली छोटी-मोटी, मंत्री-मंत्री नौकरशाही सेवाओं के भी कुछ उदाहरण दें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवदासी प्रथा से संबंधित तथ्य

(i) मंदिरो में देवदासी की नियुक्ति की जाती।

(ii) न केवल देवदासी, देवताओं की सेवा करते अपितु मंदिरो मे नृत्य, संगीत आदि का भी प्रदर्शन करते हैं।

(iii) इसके बावजूद देवदासों की सामाजिक प्रतिष्ठा बेहद ही निम्न स्तर।

(iv) 20वी सदी में ही देवदासी प्रथा को समाप्त किए जाने में सफलता।

चोल काल से 20 सदी तक निरंतर प्रचलित रहने वाली देवदासी प्रथा भारतीय समाज मे महिलाओं की दयनीय दशा का प्रतिनिधि उदाहरण मानी जाती हैं।

- बिन्दुवार उत्तर लेखन का प्रयास अच्छा है

→ आधुनिक देवदासी घटना वंशानुगत संचरण, पेशेवर और मंदिर समर्पण द्वारा चिह्नित है

मुख्य बिंदु रेखांकित करें

निष्कर्ष अच्छा है

5/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) यवन आधिपत्य के समय भारत एवं यूनान के सांस्कृतिक संबंध बहुत अधिक बढ़ गए। चर्चा कीजिये।

The cultural relations between India and Greece increased a lot during the Greek empire. Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

द्वितीय सदी ई.पू. तथा उसके पश्चात् पश्चिमोत्तर भारत में यवन स्थापना से भारत तथा यूनान के बीच संबंधों में काफी घनिष्ठता देखी गई जिसकी विशेष अभिव्यक्ति सांस्कृतिक क्षेत्र में देखने को मिलती है।

भूमिका अच्छी है।

सांस्कृतिक संबंधों प्रगाढ़ता के तत्व

(i) गांधार मूर्तिकला का विकास मुख्यतः भारतीय यूनानी कला के तत्वों का मिश्रण का परिणाम रहा। (शारीरिक संरचना यूनानी जबकि आत्मा भारतीय)।

(ii) भारतीय वस्तुओं के नाम पर यूनान का प्रभाव (काली मिर्च को यवन प्रिय कहा जाना)।

(iii) भारतीय ज्योतिष विज्ञान पर यूनानी प्रभाव (होराशास्त्र)।

विषयवस्तु की समझ ठीक है।

ज्योतिष के क्षेत्र में भी यूनान से प्रेरणा। बृहत्संहिता में कहा गया है "यूनान भले बर्बर है किंतु ज्योतिष का जन्म उनसे ही हुआ है।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ (iv) उत्तर पश्चिम भारत में यूनानी भाषा व लिपि का प्रचलन (अशोक के कुछ शिलालेखों को यूनानी लिपि मे खुदा होना)।

→ (v)

यद्यपि भारत तथा यूनान के बीच के सांस्कृतिक संबंधों की आधार-शिला सिकंदर के आक्रमण ने ही रख दी थी किंतु हिंद यूनानी आक्रमण के काल इसमें विशेष प्रगाढ़ता आई।

-सभी मुख्य बिंदुओं का उल्लेख उत्तर में करें।

- टार्न के अनुसार निश्चित तिथि से काल गणना, संवतों का प्रयोग तथा दिनों का विभाजन भारतीयों ने यूनान से सीखा

→ सांचे से ढली मुद्राओं के निर्माण की विधि

निष्कर्ष अच्छा है

4.5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(e) प्राचीन भारतीय स्थापत्य के समृद्धिकरण में बौद्ध धर्म की भूमिका अतुलनीय है। टिप्पणी कीजिये।
The role of Buddhism in the enrichment of ancient Indian architecture is incomparable. Comment.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बौद्ध धर्म का कला के विभिन्न क्षेत्रों पर स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। प्राचीन भारत के स्थापत्य के क्षेत्र में इसे बखूबी देखा जा सकता है।

शुरुआत अच्छी है

~~प्राचीन~~ प्रमुख बौद्ध स्थापत्य

रूप

स्तूप — चैत्य — विहार

स्तूप आदि के चित्र के माध्यम से दर्शाना प्रभावी होगा

स्तूप → बौद्ध धार्मिक केंद्र।

चैत्य → बौद्ध मंदिर।

विहार → बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान

विषयवस्तु को समझा है

बौद्ध धर्म से प्रेरित प्राचीन भारतीय स्थापत्य

① कार्ले, भज, पितलखोड़ा, धमेख आदि का [illegible] । चैत्य।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ii) सांची, अमरावती, सारनाथ आदि का स्तूप।

(iii) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध विहारों का निर्माण।

(iv) नालंदा, विक्रमशीला, उदंतपुरी, सोनपुरी आदि बौद्ध शिक्षा का महान केंद्र।

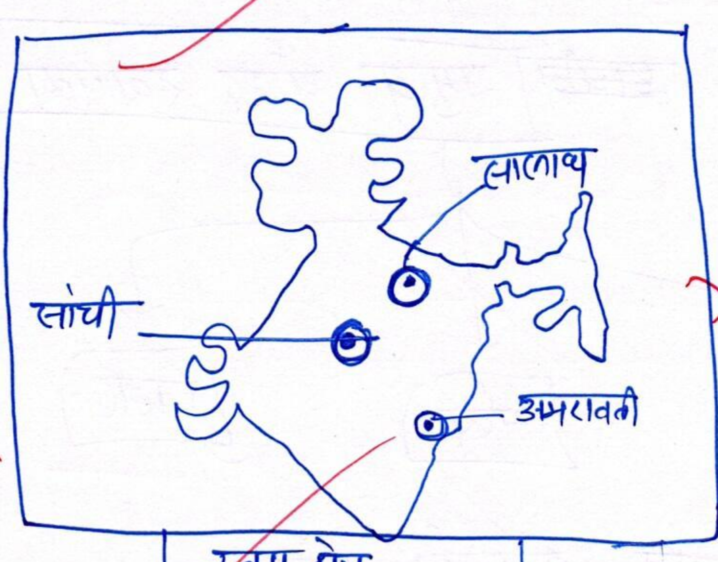

इन्ही कारणों से यह कहा जाता है कि बौद्ध धर्म ने प्राचीन भारत के स्थापत्य को समृद्ध करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

- स्तूप स्थापत्य
- गुम्बदाकार ईंटो व पत्थरों का प्रयोग
- चैत्य
- बौद्धों के पूजागृह
- लकड़ी के भवनों के अनुरूप बनावट वाले चैत्यों की उपस्थिति पश्चिमी भारत में।

बिन्दुवार लेखन का ज्यादा ठीक है

good

4/10

- निष्कर्ष ठीक है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि "चोल ग्राम सभाओं की प्रकृति लोकतांत्रिक थी"? कारण सहित औचित्यपूर्ण तर्क दीजिये। 20

Do you agree that "the Chola village assemblies are democratic in nature"? Justify with reasons. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) छठी शताब्दी ईसा-पूर्व भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु है। व्याख्या कीजिये। 15

The 6th century BC is an important departure point in Indian history. Explain. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सातवाहनों ने स्थानिकता के साथ उत्तर भारतीय विशिष्टताओं का समावेश करते हुए उत्तर और दक्षिण के बीच एक सांस्कृतिक-आर्थिक सेतु का निर्माण किया। समीक्षा कीजिये। 15

The Satavahanas built a cultural-economic bridge between North and South, incorporating North Indian specialties with local material culture. Review. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (a) गुप्त शासन व्यवस्था मौर्य शासन व्यवस्था से अनेक दृष्टिकोणों से भिन्न थी जो उनके विकास मानकों में अंतर का परिणाम था। व्याख्या कीजिये। 20

Gupta administrative system was different from Mauryan administrative system in many aspects which was the result of the difference in their development standards. Explain. 20

मौर्य शासन तथा गुप्त शासन व्यवस्था के बीच अंतर के कई तत्व पाए जाते हैं जिसका कारण दोनों साम्राज्यों के विकास मानकों में अंतर को माना जाता है।

गुप्त तथा मौर्य शासन के विकास मानकों में अंतर

मौर्य (322-186 ई.पू)	गुप्त (240 - 6 सदी के मध्य तक)
(i) मौर्य शासन ऐसे काल को प्रतिबिंबित करता है जब कबाइली व्यवस्था कृषि व्यवस्था में तब्दील हो रही थी।	(i) गुप्तकाल ऐसी अवस्था का परिचायक है जब केन्द्रीकरण के तत्व कमजोर हो रहे थे तथा विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहन मिल रहा था।

भूमिका प्रभावी बनाएं।

गुप्त साम्राज्य की विशेषता विकेन्द्रीकरण जबकि मौर्य शासन व्यवस्था केन्द्रीकृत थी। इसको भूमिका में दर्शाना प्रभावी होगा।

विषयवस्तु प्रासंगिक है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) इसी के अनुरूप मौर्य शासकों के कार्य व अधिकार में वृद्धि हो रही थी।	(ii) इसी के अनुरूप गुप्त शासकों के कार्य व अधिकार में निरंतर कमी आ रही थी।
(iii) मौर्यों के अधीन राज्यसत्ता केन्द्रीयकरण के शीर्ष पर था।	(iii) गुप्तकाल तक विकेन्द्रीकरण तथा क्षेत्रीय तत्व को प्रोत्साहन मिलने लगा था।

मौर्य शासन व्यवस्था तथा गुप्त शासन व्यवस्था में अंतर -

मौर्य काल	गुप्त काल
केन्द्रीयकरण की पराकाष्ठा	विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति
अधिकारियों की संख्या में वृद्धि (18 तीर्थ तथा 27 अध्यक्ष)।	अधिकारियों की संख्या में कमी (एक ही व्यक्ति को एक से अधिक पद दिए जाने, सामंतवाद तथा प्रशासन में क्षेत्रीय तत्व की हिस्सेदारी के कारण)

- प्रस्तुतीकरण के स्तर पर प्रयास सराहनीय है
- तथ्यात्मक समायोजन एवं विश्लेषण दक्षता अच्छी है

पुनरावृत्ति न करें

गुप्तकाल में बड़ी संख्या में विभिन्न नियुक्तियों की उपस्थिति ने केन्द्रीकृत सत्ता को कमजोर कर दिया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) प्रांतो में 'कुमारामात्य' की नियुक्ति किंतु प्रांतीय मंत्रिपरिषद को कुछ संवेदनशील जानकारी सीधे केंद्र को प्रेषित करने का अधिकार	(iii) प्रांतो में 'भुक्ति' की नियुक्ति तथा 'दामोदरपुर' व 'एरण' अभिलेख में भुक्ति महाराज के रूप में नियुक्त किया जाता
(iv) जिला स्तर पर केंद्र के द्वारा युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक नामक अधिकारियों की नियुक्ति	(iv) विषय के स्तर पर विषयपति की नियुक्ति तथा इनकी नियुक्ति भुक्ति के द्वारा
(v) ग्रामीण स्तर पर भी 'भोज' नामक अधिकारी की नियुक्ति तथा जनगणना के माध्यम से राज्य के नियंत्रण को मजबूत करने का प्रयास	(v) स्थानीय प्रशासन पर क्षेत्रीय तत्वों (ग्राम महत्तर, लिपिक (कायस्थ) आदि की हिस्सेदारी।

न्याय व्यवस्था → गुप्तों ने मौर्यों की कठोर दण्ड व्यवस्था को उदार बनाया → नागरिक व आपराधिक कानूनों को पहली बार स्पष्ट किया गया

राजस्व प्रशासन → मौर्य शासकों ने विस्तृत राजस्व प्रणाली की व्यवस्था की जबकि गुप्तकाल में भूमिदान प्रणाली का विकास

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उपरोक्त भिन्नता वास्तव में बदलती परिस्थितियों के अतिरिक्त ~~क्रमिक~~ विकास से भी प्रेरित रही।

11/20

निष्कर्ष में रचनात्मकता लाएं। गुप्त व मौर्य के मध्य प्रशासनिक व्यवस्था की तुलना करते हुए 30-35 शब्दों में निष्कर्ष लिखें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(b) उत्तर-वैदिक काल में ऋग्वैदिक धार्मिक मान्यताओं की निरंतरता के साथ ही परिवर्तन के तत्त्व दिखाई देते हैं, वहीं प्रतिक्रिया स्वरूप उपनिषदीय चिंतन का विकास भी दर्शनीय है। विवेचना कीजिये। 15

In the Post-Vedic period, elements of change along with continuity are seen in the Rigvedic religious beliefs, while the development of Upanishadic thinking is also visible in response. Discuss. 15

उत्तर वैदिक काल (1000-600ई.पू.) तथा ऋग्वैदिक काल (1500-1000ई.पू.) के दौरान प्रचलित धार्मिक मान्यताओं में निरंतरता तथा परिवर्तन दोनों के ही तत्वों को रेखांकित किया जा सकता है।

शुरुआत अच्छी है

धार्मिक मान्यताओं में निरंतरता के बिंदु

- (i) प्रकृति का दैवीकरण की प्रवृत्ति का जारी रहना (सूर्यपूजा, अग्निपूजा इत्यादि)।
- (ii) स्त्री देवियों की स्थिति का पुरुष देवताओं के समानांतर कमजोर होना (ऋग्वैदिक काल में ऋग्वेद में उषा के रथ के पहिये को इंद्र के द्वारा चूर-चूर कर दिया जाना वहीं

अवधारणात्मक समझ अच्छी है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तर वैदिक काल स्त्री देवियों को उनके पति के साथ जोड़कर संबोधित किया जाता यथा इंद्र की पत्नि इंद्राणी।।

(iii) प्रार्थना के साथ - साथ यज्ञ अनुष्ठान को दोनों पर बल।

(iv) दोनो ही काल में 'ऋत' की कल्पना परिकल्पना पर विशेष बल।

धार्मिक मान्यताओं में अंतर के तत्व

तत्व

ऋग्वैदिक	उत्तरवैदिक
(i) इंद्र, अग्नि और वरुण शीर्ष तीन देवता	प्रजापति, विष्णु तथा रुद्र तीन शीर्ष देवता
(ii) शब्दों को चमत्कारी शक्ति में विश्वास नहीं।	शब्दों के चमत्कारी शक्ति (मंत्रों) पर विशेष विश्वास।

प्रस्तुतीकरण के स्तर पर प्रयास अच्छा है।

वैदिक आर्य प्रकृति पूजक एवं बहुदेववादी थे।

तथ्यात्मक जानकारी अच्छी है।

पूषन जो मवेशियों के देवता थे अब शूद्रों के देवता बन गए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iii) सामूहिक स्तुति व प्रार्थना उपासना का मुख्य साधन	(iii) वैदिक कर्मकांड उपासना का मुख्य साधन
(iv) मुख्यतः भौतिक सुख सुविधाओं के लिए धर्म का उपयोग।	(iv) मुख्यतः पारलौकिक सुखों के लिए धर्म पर बल।
(v) उदाहरण के माध्यम से उत्पादन को प्रोत्साहन	(v) धर्म के माध्यम से अध्यात्म पर बल

गौरतलब है कि उत्तर वैदिककाल के अंत तक उपनिषदों की रचना भी होने लगी थी जिसका मुख्य कारण वैदिक प्रणाली को माना जाता है। इतिहासकारों के अनुसार यह महज संयोग नहीं है कि अधिकांश उपनिषदों की रचना दार्शनिक राजा के राज्य (विदेह) में की गई जिसमें ब्रह्म के एकता पर बल देकर वेदों में प्रचलित बहुदेववाद के विरुद्ध तथा वैदिक कर्मकांड के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की गई।

इन सबके बावजूद वैदिक धार्मिक मान्यताएं वर्तमान भारतीय धर्म का मूल बनी हुई हैं।

→ विभिन्न संस्कारों का विधान ↓ 16 संस्कार गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यंत (Write)

मुख्य बिंदु रेखांकित अवश्य करें

- निष्कर्ष लिखा है

7.5/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) काकतीय वंश की 'महिला शासक' रुद्रमादेवी के कार्यों की रूपरेखा तैयार कीजिये। 15
Sketch an outline of the position of Rudramadevi, 'the female king' of the Kakatiya dynasty. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ 1245-1289

(1236-40)

काकतीय शासक 'रुद्रमादेवी' राजपा के साथ ही भारत के प्रमुख महिला शासिकाओं में से एक रही जिन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित राज्य को न केवल अक्षुण्ण बनाए रखा अपितु इसके सुदृढ़ीकरण व विकास के लिए भी प्रयास किया।

परिचय अच्छा है।

रुद्रमादेवी देवी के कार्य

1. शत्रु शासकों व अपने प्रतिद्वंदियों से कठोर संघर्ष कर अपने राज्य व राज्यपद की सुरक्षा की।
2. राज्य की महिलाओं के बीच नए दृष्टिकोण प्रस्तुत कर उनके विकास में योगदान दिया।
3. शैक्षिक संस्थाओं के विकास के दिशा में उन्होंने प्रयास किया।

विषयवस्तु की समझ ठीक है।

रुद्रमा देवी दक्षिणी तमिलनाडु के पांड्यों, उड़ीसा के पूर्वी गंग तथा देवगिरी के सेउना को पराजित करने में सफल रहीं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

④ उनके द्वारा धार्मिक सद्भाव की नीति अपनाई गई थी तथा इस क्रम में राज्य में मुसलमानों को भी संरक्षण प्रदान किया।

⑤ व्यापार और वाणिज्य के दिशा में उन्होंने प्रयास किया।

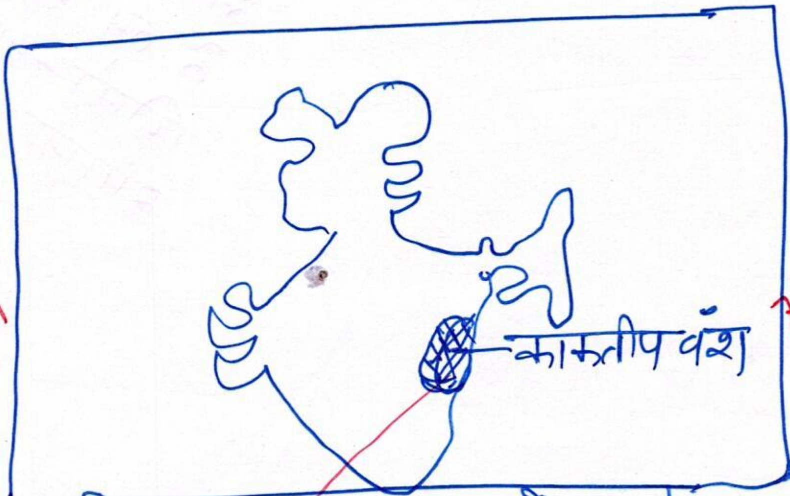

रुद्रमादेवी का राज्य क्षेत्र

⑥ उन्होंने भारत की पहली महिला हिंदू शासिका के रूप में न केवल तत्कालिक भारत बल्कि आज के भारत को भी गौरव व दिशा प्रदान की है।

→ प्रस्तुतीकरण ठीक है

→ उनके आदेश पर बने एक मंदिर के स्तंभ लेख पर उन्हें दुर्गा के रूप में दिखाया गया है

उन्होंने 'राय गज केसरी' की उपाधि ग्रहण की

प्रश्नानुसार सभी मुख्य बिंदुओं का उल्लेख करते हुए उत्तर का विस्तार करें।

→ अपने राज्य की रक्षा के लिए रुद्रमा ने ओरुगल्लु किले में दूसरी दीवार और खाई का निर्माण करवाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्हीं कारणों से रुद्रमादेवी भारत की महान महिला शासक मानी जाती हैं।

निष्कर्ष प्रभावी बनाएं

मार्कोपोलो ने रुद्रमा के शासनकाल के दौरान औरुगल्लू का दौरा किया और उसे विदेशी महिला के रूप में वर्णित किया जिसने न्याय के साथ शासन किया।

6.5/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) हर्ष को 'संपूर्ण उत्तर भारत का स्वामी' कहा गया है। उसके साम्राज्य की सीमा को शशांक, भास्करवर्मन और पुलकेशिन II के साथ उसके राजनीतिक संबंधों के संदर्भ में निर्धारित कीजिये। 20

Harsha is described as 'the lord of the whole of North India'. Determine the extent of his empire and with respect to his political relation with Sasanka, Bhaskaravarman, and Pulakeshin II. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) भक्ति की अवधारणा ने संस्कृत की कुलीन परंपरा और आम जन की स्वीकृत भाषा को दूर कर दिया। क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में साहित्य के विकास में भक्ति आंदोलन की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिये। 15

The conception of bhakti did away with the elite tradition of Sanskrit and accepted the language of the common man. Elucidate by highlighting the role of Bhakti movement in the evolution of literature in regional Indian languages. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) शुंगकालीन कला के माध्यम से धार्मिक जीवन के साथ-साथ लौकिक जीवन के संदर्भ में भी ज्ञान प्राप्त होता है। व्याख्या कीजिये। 15

The art during the Shunga dynasty gives Knowledge about the people's temporal life along with the religious life. Explain. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
टेस्ट-6

DTVF / OPT-24 **H-2406**

निर्धारित समय: तीन घंटे	अधिकतम अंक : 250
Time Allowed: Three Hours	Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

*इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा **हिन्दी एवं अंग्रेज़ी** भाषा में मुद्रित हैं।*

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

*प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के **उत्तर** दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation